डॉ. सिद्धय्या पुराणिक जी के चुने हुए वचन

– 1 –

तुम हो हरि, तुम हो हर
तुम हो सिद्ध, तुम हो बुद्ध
तुम हो यह्व, तुम हो मज्द
तुम हो ताओ, तुम हो देव
तुम हो अल्ला, तुम ही सब हो
तुम हो सार्वनामिक, तुम हो अनामिक
तुम हो सर्वगत, तुम हो सर्व भरित
तुम हो अनुपमेय, तुम निरामय
तुम हो स्वतंत्रधीर सिद्धेश्वर!

– 2 –

करुणा ही काशि, दया ही गया
ही कांची केदार हैं
प्यार ही ज्योतिर्लिंग, ममता मक्का मदीना,
भाईचारा ही बेत्लेहेम देखो जी;
कल्याण ही कल्याण, औदार्य ही उडुपि
सद् गुण ही शृंगेरी, श्रवणबेळगोळ;
शुद्ध अंतरंग ही गंगा, यमुना, तुंगभद्रा,
पावनता ही कावेरी, निर्मलता ही नर्मदा,
शुभ्र शील ही कृष्णा गोदावरी हैं
स्वतंत्रधीर सिद्धेश्वर,
जहाँ जीवी हो क्षेत्र, जहाँ हृदय हो तीर्थ
सद्भाव, सत्कर्म जहाँ हो वहाँ है सद् धर्म!

– 3 –

आधी रात में जाग जानेवाले सब
गौतम बुद्ध बनेंगे क्या?
सन्यास स्वीकार करनेवाले सब
शंकराचार्य बनेंगे क्या?

जनेऊ संस्कार निराकरण करनेवाले सब
बसवण्णा बनेंगे क्या ?
कानून उल्लंघन करनेवाले सब
गांधीजी बनेंगे क्या ?
अधिकार निराकरण करनेवाले सब
अथणि शिवयोगी,
मठाधिपति सब मृत्युंजय शिवयोगी,
बनेंगे क्या ?
स्वतंत्रधीर सिद्धेश्वरा,
तुम्हारा नाम लेनेवाले सब
'तुम' बनेंगे क्या ?

- 4 -

वृक्ष फल-फूले तो
पक्षियों को क्या कमी ?
लता फूल से भरी हो तो
भ्रमरों के लिए क्या कमी ?
शक्कर की लूट हो तो
ईंटों के लिए क्या कमी ?
ऐश्वर्य, अधिकार हो तो
प्रशांसकों की क्या कमी ?
स्वतंत्रधीर सिद्धेश्वरा,
जो धनी है उनको सभी हैं, सब कुछ हैं
धनहीन का तो तुम ही हो स्वामी
धनहीनों को मत छोड़ो प्रभु।

- 5 -

मेरे अंतरंग में करने नर्तन
आओ निराकार नटराज बन;
मेरे मन के वनकुजों में बजाने बाँसुरी
आओ अशरीर मुरलीधर बन;
मेरी छाती पर बीजाक्षर लिखने

आओ शून्य ब्रह्म बन;
मेरे स्थित रहने बहाने वात्सल्य रस;
आओ निजभाव गौरी, सद्बुद्धि शारदा बन;
आओ सभी रूपों में
आओ सब में सब हो
आओ सब कालमाल में
आओ, आओ, आओ
स्वतंत्रधीर सिद्धेश्वरा!

- 6 -

सुप्रकाश, अरुणप्रकाश, सनेरा प्रकाश, पुष्प-प्रकाश
छलकता छलकता रहा सब ओर प्रकाश!
कैसी दृष्टि संजीवनी प्रकाश!
चैतन्यदायिनी प्रकाश,
हर्षोत्साह संवर्धिनी प्रकाश
तुम्हारे इस सुनहरे प्रकाश में
मेरे देहवर्ण पर मुझे ही कौतुक,
मैं ही मेरे लिए मोहक
स्वतंत्रधीर सिद्धेश्वरा!

- 7 -

भारत के भव्य दिव्य देवालय के लिए
हिमालय ही 'महतो महीयान्' गोपुर है,
उत्तुंग शृंग ही पंक्तियों में कलश हैं।
सुबह श्याम स्वर्ण कलश होकर
धूप चाँदनी में रजत कलश होकर
जो समीप जाते उन्हें हिम कलश होकर
शोभित ये शृंग-कलश
घोयितकर रहे विश्व को -
औनत्य संहिता
पावित्र्य संदेश
अविनाशत्व की अंतर्राणी के

स्वतंत्रधीर सिद्धेश्वरा।

- 8 -

अचलित मार्ग में ठोकर खाया कहे तो
मान्य होगा क्या ?
अनदेखा मुख में दोष देखेंगे तो
मान्य होगा क्या ?
भोजन किये बिना भोजन की रुचि की आलोचना करें तो
मान्य होगा क्या ?
अनदेखे को देखे जैसा वर्णन करेंगे तो
मान्य होगा क्या ?
स्वतंत्र सिद्धेश्वरा,
अदर्शीत तुम्हें दर्शित-सा वर्णन करेंगे तो
मान्य होगा क्या ?

- 9 -

मेरी स्मृति-संपुट में
तुम्हारा नाम मधु भरे;
मेरी तुतलीवाणी के पुरावा में
तुम्हारा गुण गान का गंगाजल भरे;
मेरे सपनों के फूलों में
तुम्हारे यश का सौरभ भरे;
मेरी सुषुप्ति के कच्चे फल में
तुम्हारे ज्ञानामृत भरे -
स्वतंत्रधीर सिद्धेश्वरा,
मेरी रोमाक्षियों में
तुम्हारा त्रिविधरूप भरे!

- 10 -

विद्या पाते ही, विनय गया
बुद्धि पाते ही, श्रद्धा गयी
श्रद्धा आते ही, विवेचन गयी
समृद्धि आते ही, संस्कृति गयी

विज्ञान सीखते ही, संतृति गयी
तन स्वस्थ होते ही, चित्त अस्वस्थ
आयु बढ़ते ही, जीवन नीरस
प्रबोध मिलते ही, साधना क्षीण
जाति भेद से, प्रीति गयी
आज़ाद होते ही, सौजन्य गया
सिद्धय्या पुराणिक आया
स्वतंत्रधीर सिद्धेश्वरा गया!